कथक में दिखाए जीवन के कई पक्ष

शशिप्रभा तिवारी

कथक महोत्सव के दूसरे दिन कुछ एकल और कुछ नृत्य रचनाएं पेश की गईं। इन नृत्य प्रस्तुतियों में बनारस घराने की कथक नृत्यांगना जयंतीमाला, लखनऊ घराने के ओमप्रकाश मिश्र, शीला मेहता और जयपुर घराने के युवा नर्तक अभिमन्यु लाल के नृत्य को खूब सराहा गया। नृत्यांगना भास्वती मिश्र की नृत्य रचना 'जीवन ध्वनि' की गूंज दिल को छूने वाली थी। वहीं नर्तक हरीश गंगानी और गुरु नंदिनी सिंह की नृत्य रचना भी आकर्षक रही।

कथक महोत्सव के दूसरी संध्या को दर्शकों ने दिल्ली की नृत्यांगना भास्वती मिश्र की नृत्य रचना 'जीवन ध्वनि' का आनंद लिया। यह नृत्य रचना जीवन के हर्ष-विषाद, सुख-दुख और उतार-चढ़ाव को दर्शाने वाली थी। हरिवंश राय 'बच्चन' की 'मधुशाला' पर आधारित इस नृत्य रचना में कविता के अंश को गेय और संवाद में ढाला गया था। कथक के शुद्ध नृत्य के साथ अभिनय के जरिए नृत्य को पिरोया गया था। इसका संगीत शांति शर्मा के साथ चंद्रचूड़ भट्टाचार्य ने बड़े ही मनोयोग से रचा था। नृत्यांगना भास्वती मिश्र के साथ डेनियल, द्विपायन, रोहित, संगीता, इप्सिता, शिल्पी व अवंतिका ने नृत्य पेश किया।

कथक केंद्र के दक्षिणी दिल्ली केंद्र के छात्र-छात्राओं ने नृत्य रचना 'नृत्यांजलि' पेश की। यह परिकल्पना नर्तक हरीश गंगानी ने की थी। इस नृत्य रचना का आगाज अभिनय दर्पण के श्लोक पर आधारित नृत्य से हुआ। इसका विस्तार तीन ताल में नृत पक्ष की प्रस्तुति से हुआ। इसमें थाट, परण, आमद, परण और कवित्त को शामिल किया गया था। इस प्रस्तुति में शिरकत करने वाले शिष्य-शिष्याएं थे- तान्या, अर्चित, देवीविशा, निकी, सूर्या, नवीना, इदा, मेधा, तनुश्री, श्रुति और कोमल।

नृत्य रचना 'नृत्यांगिकम' अगली पेशकश थी। यह परिकल्पना गुरु नंदिनी सिंह ने की थी। इसकी शुरुआत शिव वंदना से हुई। इसके बोल थे-ओम नमः शिवाय। तीन ताल में इसके तकनीकी पक्ष को प्रस्तुत किया गया। कथक केंद्र के अरविंद और प्रीति मदान की युगल प्रस्तुति में गणेश परण, अनाघात, गत निकास और सवाल-जवाब को नृत्य में पिरोया। उनके नृत्य का समापन 36 चक्करों से हुआ।

नृत्यांगना शीला मेहता ने समारोह के दूसरे दिन नृत्य पेश किया। उन्होंने अपने नृत्य का आगाज 'अनुभूति' से

नृत्य

शीला मेहता का कथक

किया। रचना-'एक सुर चराचर छायो' के बोल पर शीला ने प्रकृति की महिमा को नृत्य में व्याख्यायित किया। उन्होंने सिर्फ तबले के ताल आवर्तन पर हस्तकों व पद संचालन के जरिए सूरज, चांद, सितारे, नदी, पेड़, पशु-पक्षी की गतिविधियों को दर्शाया। उनके नृत्य में मृग व मयूर की गतों का प्रयोग प्रसंगानुकूल था। शीला ने कथक के शुद्ध नृत को तीन ताल में बांधा। इसमें गिनती की एक तिहाई में सीता-हरण के प्रसंग को दर्शाने का अंदाज खास था। पंडित किशन महाराज रचित एक तिहाई पेश को शीला ने पेश किया। इसमें नौ रसों को मुख के भावों और पैर के काम के जरिए पेश किया।

भाव को नृत्य रचना 'होली' में पेश किया। इसमें लौकिक से अलौकिक की यात्रा को दर्शाया गया था। शुरू में यशोदा व कान्हा के संबंध को चित्रित किया। इसके लिए बंदिश 'बरसत रंग गोकुल में' का चयन किया गया था। राधा-कृष्ण की होली के लिए रचना 'रंग डारूंगी नंद के लालन पे' की बंदिश को शीला ने चुना। ठुमरी 'छेड़ो ना मोहे कन्हैया' और 'मोरी भींगी रेशम चुनर' को भी नृत्य में पिरोया गया।

शीला के साथ संगतकारों में शामिल थे-तबले पर कालीनाथ, बांसुरी पर हिमांशु, सारंगी पर संदीप मिश्र और गायक मनोज देसाई।

बनारस घराने की मशहूर कथक नृत्यांगना सितारा देवी और आचार्य चौबे महाराज की पुत्री जयंतीमाला ने अपने घराने की कुछ खास चीजों को पेश किया। उन्होंने शुरुआत सरस्वती वंदना से की। तीन ताल के उठान में पैर का काम पेश किया। उन्होंने अपनी मां से सीखे पलकों व भौंहों के संचालन को पेश किया, जो अनूठा था। बिना घुंघरू के आवाज किए, एक चलन पेश की। जयंतीमाला ने तीन 'धा' से सजा फरमाइशी तिहाई, घूंघट की गत, मिश्र जाति के परण को नृत्य में पेश किया। उन्होंने पंडित बड़े रामदास की ठुमरी 'डगर बीच कैसे चलूं, मग रोके कन्हैया बेपीर' पर भाव पेश किया।

समारोह में बच्चा बाबू के नाम से मशहूर नर्तक ओमप्रकाश मिश्र ने कृष्ण वंदना और तीन ताल नाचा। तीन ताल में थाट, परमेलु, लड़ी पेश की। उन्होंने धमार ताल में वीर रस की झलक को एक तिहाई में पेश किया। गत निकास में बांसुरी और आंचल की गतों का अंदाज दिखाया। उन्होंने विचित्र रूपक ताल में कुछ तिहाइयां पेश की। पंडित बिंदादीन महाराज की ठुमरी 'मोहे छेड़ो ना नंदलाल के सुनहु' पर भावों को पेश कर, अपनी पेशकश को विराम दिया। उनके साथ संगतकारों में शामिल थे- तबले पर प्रवीण कुमार, सारंगी पर शामनाथ मिश्रा। गायन व पढ़ंत का दायित्व अनन्या मिश्र ने संभाला।